International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2016; Page No. 25-28

संजीव के कथा साहित्य में सम–सामयिक समस्याएँ

डॉ. वन्दना तिवारी

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

प्रस्तावना

आज के आधुनिक युग में मनुष्य जिस समय और युगीन परिस्थितियों से गुजर रहा है, उसे संज्ञा देना बुद्धि के परे है। फिर भी गहन चिंतन मनन और वैचारिक प्रक्रिया से गुजरते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि आज के युग को विज्ञान, तकनीकी आदि की अपेक्षा विभिन्न समस्याओं से युक्त संक्रमणकालीन युग की संज्ञा दी जानी चाहिए। संसार में मानव और समाज का रिश्ता एक सिक्के के दो अटूट पहलू के रूप में दिखाई देता है। कई तरह के सवाल समाज के सामने आकर खड़े हो गये हैं। साहित्य ही वह माध्यम है जिसका सहारा लेकर समाज के सामने उभरे सवालों और उसके कारणों, समाधानों को बड़ी सूक्ष्मता के साथ उजागर किया जा सकता है। आज के समय में समस्याएँ इस तरह विकराल रूप ले रही हैं कि उसका प्रभाव मानव जीवन पर भी स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है। साहित्य समाज का दर्पण होता है, इतना ही नहीं जिस तरह साहित्य समाज का सत्य उद्घाटित करता है, उसी प्रकार साहित्यकार भी समाज के साथ समाज के साथ पूर्णतः या आंशिक रूप से जुड़ा रहता है और अपने द्वारा देखे गये, जीये गये क्षणों को अनुभवों को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। समाज के प्रश्नों, घटनाओं, समस्याओं और परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण साहित्य में करता है और उसका समाधान कभी यथार्थ रूप में कभी आदर्श रूप में ढूँढ़ने की कोशिश करता है। समाज के सत्य का यथार्थ चित्रण की परम्परा प्रेमचंद युग से आज तक चली आ रही है और उसी परम्परा के अगले क्रम में संजीव हैं जो एक समकालीन यथार्थवादी कथाकार के रूप में जाने पहचाने जाते हैं। संजीव ने अपने रचनात्मक लेखन के माध्यम से अपनी रचनाओं कहानियों एवं उपन्यासों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक सवालों को उजागर किया है।

डॉ. सलीम वेंकटेश्वरराव के अनुसार–"शरीर और छाया या आत्मा एवं शरीर का जो नित्य एवं शाश्वत सम्बन्ध है, वही सम्बन्ध समस्या एवं मनुष्य जीवन का है।" इससे एक बात तो स्पष्ट है कि मानव जीवन में यदि समस्याएँ न होती तो मानव का विकास भी न होता। संजीव का सारा कथा संसार इस तथ्य से ओत–प्रोत है। उनके कथा साहित्य पिछड़े, वर्जित क्षेत्र की दर्दनाक व्यथा कथा कहते हैं। उनकी रचनाओं में ग्रामीण आंचलिक मजदूर, शोषित वर्ग, अशिक्षा, राष्ट्रीय सम्पत्ति की लूट, पूँजीपतियों, माफियाओं, डाकूओं, सत्ता शासन व्यवस्था द्वारा किया जाने वाला शोषण, जातिभेद, नारी शोषण, भ्रष्ट व्यवस्था, विस्थापन की त्रासदी, प्रदूषण की समस्या, रोजी–रोटी की समस्या, आदिवासी और स्त्री विमर्श, कला का विलुप्तीकरण, लोककला का बाजारीकरण, दलित समस्या इत्यादि अनेक समस्याओं को अपने कथा–साहित्य में वे उजागर करते हैं।

सामाजिक सवाल संजीव के कथासाहित्य में चित्रित सामाजिक समस्याओं का विभाजन इस प्रकार है। जातिभेद, छुआ–छूत, प्रदूषण, व्यसनाधिनता, अशिक्षा, शादी–ब्याह, शोषण में जमीदार, ठेकेदार, भ्रष्ट अधिकारियों, पुलिस, महाजन द्वारा नारी शोषण, पारिवारिक शोषण, यौन शोषण आदि।

संजीव के साहित्य में जातिभेद की समस्या का चित्रण हुआ है। कहानी 'जब नशा फटता है' में रामकरण बताता है कि ब्राह्मण, राजपूत किसी भी जाति की लड़की को पत्नी बना सकता है। परन्तु अछूत या निम्न वर्ग का उच्च जाति की लड़की से ब्याह नहीं कर सकता है। अगर वह विवाह करेगा तो उसे कड़ी से कड़ी सजा देंगे। आज के शिक्षित समाज, आधुनिक युग में भी इस प्रश्न का समाधान नहीं हुआ है। समाचार पत्रों के पन्नों पर आये दिन इस तरह की खबरें पढ़ने को मिलती है। 'चूतिया बना रहे हो' इस कहानी में भी चुनाव के वक्त अपनी–अपनी जातियों की मीटिंग ली जाती है। मीटिंग में निर्णय लिया जाता है कि चाहे मर ही क्यों नहीं जावे लेकिन अपनी जाति में रहो जो बाहर जायेगा वह दोगला और उसका हुक्का–पानी बंद करने का आवाहन करना यह जाति–पांति की समस्याओं को उजागर करता है। चुनाव के वक्त अपना राजनीतिक स्वार्थ साधने हेतु गुण्डों द्वारा समाज–समाज में जातिभेद की भावना को बढ़ावा देकर लोगों के आपसी स्नेह सम्बन्ध को खत्म करने का प्रयास करते हैं।

यहाँ संजीव के विचार अच्छे लगते हैं। "जाति प्रेम और जाति घृणा का जो जलजला आया कि रहा सहा भाईचारा भी खत्म हो गया।" इससे यह बात स्पष्ट होती है कि राजनीति का सहारा लेकर सत्ता, व्यवस्था, कुर्सी में बैठे बड़े–बड़े लोग विभिन्न प्रलोभनों के लालच में समाज–समाज में घृणा तथा हिंसा भड़काकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं।

मानव जीवन में शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। भारत सरकार शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए नाना प्रकार की योजनाएं चला रही है तथा आगे भी इस दिशा में कार्य करने को प्रयासरत है। क्योंकि आधुनिक युग में शिक्षा को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। आज उसे ही पढ़ा लिखा या शिक्षित समझा जाता है। जिसे कम्प्यूटर, मोबाईल, अंग्रेजी का ज्ञान हो। आज हमारे देश में दलितों, किसानों, मजदूरों, गरीबों को पैसों के अभाव के कारण शिक्षा से वंचित रहना पड़ता है। संजीव ने इस समस्या को अपने रचनात्मक साहित्य में सूक्ष्मता से उठाया है। कहानी 'प्रेतमुक्ति' में बेटे अपने पिता के साथ लड़ते झगड़ते हैं। इसलिए की उन्हें अनपढ़ क्यों रखा गया ? उन्हें पढ़ाया–लिखाया क्यों नहीं गया ? अगर उन्हें थोड़ा बहुत भी पढ़ाया–लिखाया होता तो वे अपने परिवार का बोझ उठाने में सहायक हो सकते थे। प्रस्तुत कहानी में चलित्तर का बेटा जगेसर का ब्याह होने पर परिवार में एक व्यक्ति बढ़ जाता है तब बाप बेटे झगड़ते हैं। जगेसर कहता है "थोड़ा पढ़ा लिखा दिया होता तो यह नौबत न आती।" इस कथन से ज्ञात होता है कि जगेसर पढ़ा लिखा न होने के कारण उसे नौकरी नहीं मिलती परिणामस्वरूप अपना परिवारिक खर्च चला पाने में वह असमर्थ है। अर्थाभाव के कारण जन सामान्य शिक्षा पाने के लिए स्कूल की फीस भर पाने में असमर्थ है जिससे उनकी शिक्षा बीच में ही छूट जाती है। उनकी गरीबी, दरिद्रता, असक्षमता, उनकी अशिक्षा के अधूरी रह जाने का मुख्य कारण है। इसी कारण अशिक्षा का प्रश्न आज भी देश के सामने विकराल रूप लेकर खड़ी है। 'मरोड़' कहानी में मास्टर दीनानाथ की पत्नी अनपढ़ होने के कारण

पछताते हैं। वे कहते हैं "वह थोड़ी शिक्षित और सुसंस्कृत होती तो बच्चे इस कदर न बिगड़ते।" इस कथन से स्पष्ट होता है कि शिक्षा के अभाव में बच्चे संस्कारहीन हो जाते हैं, बिगड़ जाते हैं। संसार का बोझ नहीं उठा पाते, प्रगति करने के बजाय संसार की प्रतियोगिता में पिछड़े रह जाते हैं और जीवन भर दुख और अवसाद में घिरे रहते हैं, किसी के सामने आत्म–सम्मान के साथ जी नहीं पाते हैं।

वर्तमान समय में समाज के सामने अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न है, भ्रष्ट अधिकारियों द्वारा आम जनता का शोषण करना। सरकार आम आदमी के हित में अनेकानेक योजनाएं बनाती हैं किन्तु व्यवस्था की कमजोरी और भ्रष्टाचार के कारण उसका लाभ आम आदमी तक नहीं पहुंच पाता भ्रष्ट अधिकारी और राजनीतिक पार्टियां ऊपर ही ऊपर इसका लाभ उठा ले जाते है, जिससे न जाने समय–समय पर कितने ही घोटाले होते रहते हैं और समाचार पत्रों में ये खबर भी छपते हैं जिनमें बड़े–बड़े मंत्री तक के हाथ होने की संभावनाएं बतायी जाती हैं। योजनाओं के लाभ का उल्लेख केवल कागजों पर ही मिलते हैं। डॉ. पांडुरंग पाटील कहते हैं–"विकृत जनतंत्र के कारण इस युग में व्यवस्था शब्द को सुनते ही वितृष्णा होने लगती है। कर्मचारियों की कार्यपद्धति इतनी भ्रष्ट हो गई है कि ईमानदार व्यक्ति को अपना जीवन निर्वाह करना मँहगा पड़ रहा है। भ्रष्ट कर्मियों के कृत्य दिनों दिन असह्य होते जा रहे हैं।" इस यंत्रणा से हमेशा आम आदमी का ही शोषण–दोहन होता है। हमेशा वे ही त्रस्त रहते हैं। 'दुनिया की सबसे हसीन औरत' कहानी में ओराँव जनजाति की अनपढ़ गरीब औरत सब्जी लेकर जब ट्रेन से जा रही है तो टी.टी. साहब कहता है "देखो हमारी गाड़ी में चढ़ो तो अच्छी सब्जियाँ लेकर वरना दूसरी गाड़ी देखो।" इस प्रकार ट्रेन के अधिकारी लोग भी आदिवासियों का शोषण करते दिखाई देते हैं। 'पाँव तले की दूब' उपन्यास में झारखण्ड में स्थित आदिवासियों का चित्रण हुआ है। यहाँ उद्योगपति नये–नये उद्योग शुरु करने हेतु आदिवासियों की जमीन उनसे छीन लेते हैं। उन्हें विस्थापित कर देते हैं। अधिकारी लोग भी इन्हीं की सहायता करते है। यह शोषण देखकर कथानायक कहता है–"उन्हें जमीन से भी बेदखल किया जा रहा है। मुआवजा भी अफसरों के पेट में।" प्रस्तुत विवेचन से पता चलता है कि उद्योगपति और अधिकारियों के बीच में ताल–मेंल और साँठ–गाँठ के कारण आदिवासी बेघर होते जा रहे हैं, विस्थापित होते जा रहे हैं, उनका शोषण हो रहा है।

हमारी समाज व्यवस्था में जनता की सेवक पुलिस कहलाती है। लेकिन आज पुलिस अपनी वर्दी का, अपने ओहदे एवं रुतबे का गलत प्रयोग करते हुए आम आदमी का शोषण करती है। समाज के रक्षक ही भक्षक बनते जा रहै हैं। बी.ए. शर्मा लिखते हैं कि–"कल्याणकारी राज्य में पुलिस की भूमिका एक समाजसेवी संगठन की होती है। उसे कानून तथा व्यवस्था बनाये रखने तथा अपराधों की रोक थाम करने वाली बुनियादी भूमिका निभानी होती है।" लेकिन आधुनिक काल में पुलिस के भ्रष्टाचार के कारण आम आदमी शिकायत लेकर पुलिस थाने में जाने से डरने लगता है। संजीव की 'ट्रैफिक जाम' कहानी में अपघात की घटना के कारण ट्रैफिक जाम होती है। पुलिस घटना स्थल पर आते समय बीच में एक शराब पिया हुआ आदमी नजर आता है, उसे पहले पीटते हैं। एक चोर पुलिस की जेब काटता है। तब सब लोग कहते हैं–"इत्ते पैसे एक दिन में उगाह लेते हो सिपाही जी" इससे स्पष्ट होता है कि इनकी तनखा कम होती है लेकिन जेब में पैसे ज्यादा होते है। इस तरह भ्रष्टनीति का बोलबाला समाज में देखने को मिलता है। 'भूमिका' नामक कहानी में सेठ के कहने पर कुछ लोग गरीबों की बस्ती में आग लगा देते हैं। आग बुझाने के पश्चात् हमेशा की तरह पुलिस वहाँ पहुँच जाती है। संजीव लिखते हैं–"पुलिस जैसा पहले तय था बाद में आयें, हम फिर भी छुट्टे सांड़ों की तरह घूम रहे थे।" इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि पुलिस जो आम जन की सुरक्षा के लिए नियुक्त की जाती है। अवसर पड़ने पर आमजन की सहायता न कर आग लगाने वाले गुण्डों का साथ देती है। वे अपराध करके भी खुले आम समाज में बिना किसी डर भय के घूमा करती है। जिससे समाज में अपराध करने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और समाज इससे प्रभावित रहता है। आम आदमी डर–डर कर जीने के लिए विवश होता है।

हमारे समाज के सामने और एक प्रश्न खड़ा होता है, व्यापारियों द्वारा किसानों का शोषण। डॉ. विमल महाजन शोषण के बारे में लिखती हैं कि "कर्ज वह मेहमान है जो एक बार आकर जाने का नाम नहीं लेता।" इससे स्पष्ट है कि किसान अनाज का निर्माण खेती में करता है, लेकिन ब्याज के रूप में महाजन, व्यापारियों के जेब भरता चलता है। संजीव के 'सागर सीमांत' और 'दुश्मन' जैसी कहानियों में किसानों, मजदूरों के शोषण की समस्या को बड़ी शिद्दत के साथ अभिव्यक्त किया गया है।

भारतीय समाज में नारी को वैसे तो प्राचीन काल में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता था। जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता वास करते हैं, ऐसा कहा जाता था। यज्ञ, पूजा, शिक्षा इत्यादि कार्यों में उन्हें समान रूप से स्थान दिया जाता था। किन्तु धीरे–धीरे परिस्थितियां बदल गयी हैं। पुरुष की तुलना में आज कहीं न कहीं नारी को दोयम दर्जे का स्थान दिया जाता है। आज शिक्षा के प्रचार के कारण नारी पढ़ लिखकर अपने कर्तव्य के प्रति सचेत हो चुकी है। आज का दौर महिला सशक्तिकरण और नारी विमर्श का दौर है किन्तु इतना होने पर भी उसे आज भी एक भोग्य वस्तु के रूप में भी देखा जाता है परन्तु स्त्री इन चीजों से लगातार लड़ कर बाहर आने की कोशिश करते हुए स्वयं को समाज का आवश्यक और महत्वपूर्ण अंग साबित करने का सफल प्रयास कर रही है। पुरुषों से आगे निकलने का प्रयास कर रही है। उनके बीच अपना स्थान बनाने का प्रयास कर रही है। संजीव के साहित्य में नारी के पारिवारिक, मानसिक, शारीरिक एवं लैंगिक शोषण का बड़ा ही सजीव और मार्मिक चित्रण मिलता है। 'जसी बहू' कहानी में सितई पंडित जसी बहू का बलात्कार करता है, लैंगिक शोषण करता है। गर्भवती रहने पर बदनामी के डर तथा अपनी जिम्मेदारी से मुक्ति के लिए गर्भ गिराने की बात करता है। लेकिन जसी बहू का आत्म सम्मान अभी बचा हुआ है और वह इसका कड़ा विरोध करती है। इस पर सितई पण्डित उसे मारता–पीटता है। इतना ही नहीं उसके पति के वापस आने पर भी उसे सीखा पढ़ा देता है। जिससे जसी बहू को उसका पति मार–पीट कर घर से बाहर निकाल देता है और दूसरा विवाह कर लेता है। यहाँ नारी शोषण का अभिशप्त रूप है किन्तु जसी बहू हार नहीं मानती तथा अपने बलबूते जीने का निश्चय करती है जोकि स्त्री सशक्तिकरण का अच्छा उदाहरण है। 'किसन गढ़ के अहेरी' उपन्यास में जमींदार ज्योतिष बाबा का गजब का धंधा है। संजीव लिखते हैं कि "गाँव में हाथ की रेखाएँ पढ़ते–पढ़ते बदन की सारी रेखाएँ पढ़ डालते हैं।" स्त्री का शोषण समय–समय पर अवसर मिलते ही सभी करने का प्रयास करते हैं।

संजीव ने अपनी रचनाओं में शादी–ब्याह को लेकर समाज के सामने खड़े होने वाले सवालों को भी उठाया है। आधुनिक युग में भी शादी–विवाह करते समय जात–उपजात, धर्म, गोत्र, वंश आदि के बारे में पूछताछ होती है। शादी ब्याह के अवसर पर दहेज प्रथा समाज के लिए घातक और विकराल समस्या है, जो धीरे–धीरे सुरसा की तरह अपना मुँह फाड़कर लड़की पक्ष के लोगों को निगल जाती है। ज्योत्सना शर्मा लिखती हैं कि "लोग जाति–पाति का ध्यान इतना रखते हैं कि गरीब से गरीब व्यक्ति भी इसके पालन में अपने आप पर गर्व करता है।" संजीव के कथासाहित्य में 'जब नशा फटता है' कहानी में माईकल की लड़की तथा जोसेफ का लड़का एक दूसरे से प्रेम रखते हैं तथा दोनों शादी करना

चाहते हैं। दोनों की शादी करने से पहले जोसेफ माईकल की जात जानना चाहता है। जोसेफ अपने ताड़ीखाने के दोस्त भग्गु से कहता है, "इसाई होने के पहले कौन जात का था माईकल जरा पता करा तो" – इस कथन से यह बात पता चलती है कि आदमी कितना भी बड़ा या छोटा हो शादी ब्याह के मामले में जात–पात का खेल खेलता आया है, इस बात को लेकर खून–खराबा भी समाज में हो जाता है। पहले खुले आम प्रदर्शन किया जाता था, आज पर्दे के पीछे स`चल रहा है।

संजीव ने अपनी रचनाओं में नाना प्रकार के शोषण की समस्या को उजागर किया है। हमारे भारतीय समाज में जाति–व्यवस्था, वर्ण–व्यवस्था को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। इसी कारण हमारे समाज में ऊँच–नीच, अमीर–गरीब, छोटा–बड़ा, सवर्ण–दलित जैसे भेद निर्मित हो गये हैं। इसी सामाजिक भेदभाव के कारण शोषण की समस्या समाज के सम्मुख उत्पन्न हो गयी है। शोषण को लेकर डॉ. प्रभा बेनीपुरी के विचार कुछ इस प्रकार हैं–"जब तक मनुष्य मात्र के प्रति मनुष्य हृदय में प्रेम का भाव आविर्भूत न हो मनुष्यता कैसे मिटेगी ! कहीं व्यक्ति का समाज और कहीं राष्ट्र एक–दूसरे का शोषण करेंगे ही।" इस कथन से स्पष्ट है कि यह समस्या प्राचीन काल से ही चली आ रही है। जब तक मनुष्य के मन में प्रेमभाव, सौहार्द की भावना, समानता, समता और बंधुत्व की भावना निर्मित नहीं होगी तब तक शोषण की समस्या समाज में बनी रहेगी। संजीव ने 'किसन गढ़ का अहेरी' उपन्यास में जमींदारों द्वारा किये जा रहे शोषण से गरीब दलित किस तरह पीड़ित, प्रताड़ित, त्रस्त हैं, इसका उल्लेख सजीवता के साथ किया गया है। इस उपन्यास के जमीदार इनरपतिसिंह का बेटा रुपई, बल, धन के कारण हरिया नामक दलित पर अमानुषिक अत्याचार करता है। उसका कसूर यह है कि जमींदार की बेटी को पेड़ से आम तोड़कर देता है। हलवाहा यह खबर बढ़ा–चढ़ाकर कहता है तब रुपई कहता है कि "यह मजाल की आंखें गड़ावे मालिक की लड़की पर, जिस पत्तल में खाए उसी में छेद करें !" इसका परिणाम भयंकर निकलता है और हरिया की जान चली जाती है। आज भी उच्च वर्ग के द्वारा निम्न वर्ग, गरीब, दलित का इसी तरह शोषण किया जाता है। ठेकेदारों द्वारा काम करने वाले मजदूरों का शोषण किया जाता है। सरकार से काम का ठेका लेते समय ज्यादा पैसा लिया जाता है तथा मजदूरों को कम से कम पैसा देकर काम करवाया जाता है और मुनाफा ठेकेदार के पेट में जाता है, बेचारा गरीब मजदूर जहालत, गरीबी, बेबसी की जिंदगी जीने को मजबूर होता है। मजदूर, मेहनतकश वर्ग की कमजोरी का फायदा उठाते हुए वे उनका आर्थिक, शारीरिक, मानसिक शोषण करते है। ठेकेदार पैसों से धनवान हो जाता है और मेहनत करने वाला, खून को पसीने की तरह बहाने वाला मजदूर गरीब का गरीब ही रह जाता है। 'धार' उपन्यास में ठेकेदार माफिया आदिवासियों से अवैध कोयला खनन करवाते हैं, पेट की आग बुझाने के लिए एक दिन कोयला खनन करते समय जमीन धँसने से मिट्टी का एक ढ़ेला गिर जाता है। फोकल नामक मजदूर उसमें धँस जाता है, वह बचाने के लिए चिल्लाता है, तब ठेकेदार कहता है कि "अरे मार दो अभी जिंदा ही है साला मार के भर में जूनसब जगह।" इससे स्पष्ट है कि उन्हें मजदूरों की कोई फिक्र नहीं है, चाहे मजदूर मरे या जीये इससे उन्हें कोई लेना देना नहीं होता। सिर्फ अपना मुनाफा, लाभ और स्वार्थ निकालना ही उनका उद्देश्य होता है। 'धार' में मैना का बलात्कार जेलर द्वारा किया जाता है, उसे जीते जी उसके पिता और पति त्याग कर अंतिम संस्कार कर देते हैं। कबाड़ी मंगर के साथ बिना विवाह किये साथ रहती है। किन्तु वह भी उसे धोखा देता है। आदिवासी मजदूर समुदाय अपनी एकजुटता तथा सहयोग से जनखदान का निर्माण करते हैं किन्तु कोयले का अवैध खनन करने वाले माफियाओं तथा सरकारी कोयला खदानों को यह बात पचती नहीं है और जनखदान को नष्ट कर दिया जाता है। मैना और अनेक मजदूर मारे जाते हैं। इस तरह यह उपन्यास आदिवासी मजदूरों के शोषण का बड़ा ही मार्मिक चित्रण उपस्थित करता है।

समाज में एक और महत्वपूर्ण समस्या है और वह है व्यसनाधीनता की समस्या। संजीव की कुछ कहानियों में इस समस्या का भी उद्घाटन हुआ है। 'तिरबेनी का तड़बन्ना' कहानी में चैत का महीना आने पर गाँव के लोग ताड़ी पीकर नशे में चूर हो जाते हैं। एक दूसरे के साथ गाली गलौज, झगड़ा करते हैं। संजीव लिखते हैं कि "चैत आते ही सारा गाँव प्रेतों जैसा बर्राता है।" नशे में गाँव के लोग क्या बोलते हैं, होश न होने के कारण उन्हें खुद भी मालूम नहीं होता है। इतना ही खुद पर नियंत्रण न होने के कारण स्त्रियों के साथ अभद्र व्यवहार करते हैं। परिणाम स्वरूप परिवार बिखर जाते हैं। 'जब नशा फटता है' कहानी में मेहतर लोग मैला ढ़ोने का काम करते हैं। समाज और घर–घर की गंदगी साफ करते हैं। उसकी बदबू से बचने के लिए चार–चार बोतल शराब पी लेते हैं। पेट की मजबूरी उनसे ऐसे घृणित कार्य भी करा ले जाती है।

संजीव के कथासाहित्य में प्रदूषण की समस्या पर भी प्रकाश डाला गया है। 'धार' नामक उपन्यास में कोयला खदान में प्रदूषण ही प्रदूषण दिखाई देता है, जिससे वहां का आदिवासी समाज अत्यधिक प्रभावित है। धूप और धुएं में जलती हुई बस्तियां, दमघोटू वातावरण, कुहासा, बजबजाती नालियां, गंदी गलियां चारों ओर गंदगी का साम्राज्य फैला है। संजीव लिखते हैं कि "न दिन है न रात, दोनों की दहलीज पर संथाल परगना का पूरा नंगा इलाका घायल गुरार्ते सुअर की तरह पड़ा है। नंगी–अधनंगी पहाड़ियाँ, जहाँ तहाँ खड़े शाल महुए खजूर और ताड़ के पेड़, बेर की झाड़िया, बुवई बंजर धरती, सूखती नदियाँ, सूखते कुएं, तालाब, भयंकर पोखरियां, खाढ़े, जहां तहां सोये पड़े मुर्दे से लोग।" इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य के भौतिक सुखों के कारण प्राकृतिक घटकों को हानि पहुंच रही है। एक तरफ विकास है तो दूसरी तरफ समाज अवनति के गर्त में गिरता जा रह है। न जाने कितने वर्षों से राँची(झारखण्ड) में कोयला खदानों के नीचं आग लगी हुई है किन्तु उसे बुझाने का सरकार द्वारा कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है, जिससे प्राकृतिक संसाधन नष्ट हो रहे हैं। 'पाँव तले की दूब' उपन्यास में झारखण्ड स्थित मेझिया गाँव केन्द्र बिंदु है। उपन्यासकार इसके माध्यम से यह बताना चाहता है कि औद्योगिकीकरण और विकास के नाम पर किस प्रकार गाँव तथा आदिवासियों को विस्थापित किया जा रहा। समाज के प्रगति एवं विकास का भ्रम फैलाकर गाँव की जमीन लेते समय नौकरी देने का प्रलोभन दिया जाता है। मकान, शिक्षा, पानी देने का वादा किया जाता है। गाँव के लोगों को आवश्यक सफाई के अभाव में नाना प्रकार की बीमारियों का भी का सामना करना पड़ता है। संजीव लिखते हैं कि "लेकिन चपच यह रोग तो मनसा नाले के चलते है। बिजली के कारखानों का सारा गंदा पानी बहता है इससे और उससे भी जहरीली है हवा।" बिजली के कारखाने से बहने वाली गंदगी, गंदा पानी, जहरीली हवा के प्रभाव से लोगों को लकवे की बिमारी हो रही है। यहां लागों को न तो शुद्ध खाना मिलता है, न शुद्ध हवा पानीं। अस्पतालों का दूर–दूर तक नामों निशान नहीं।

सारांशतः हम देखते है कि संजीव ने अपने स्तर पर अपनी रचनाओं में जाति भेद–वर्गभेद शोषण, छुआ–छूत, शराबखोरी, धर्मान्तरण, अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, विस्थापन, मजदूरों पर अत्याचार, व्यसनाधीनता, भ्रष्ट व्यवस्था, नक्सलवाद, डाकू समस्या, पुलिस द्वारा शोषण, प्रदूषण की समस्या, दलित स्त्री समस्या न जाने कितने ही प्रकार की समस्याओं का चित्रण कर समाज के सामने लाने का प्रयास तो किया ही है इसके साथ ही समाज और सरकार को मिलकर इन दिशाओं में सुधार करने के लिए पहल करने के लिए भी रास्ता दिखलाने का कार्य किया है।

संदर्भ

1. डॉ. सलीम वेंकटेश्वरराव–यशपाल के उपन्यास : समस्यामूलक अध्ययन, पृ. –24।
2. संजीव–भूमिका तथा अन्य कहानियाँ, पृ.–43, 78, 47।
3. संजीव–प्रेतमुक्ति, पृ.–23।
4. संजीव–तीस साल का सफरनामा, पृ.–35।
5. डॉ. ज्योत्सना शर्मा–शिवानी का हिन्दी साहित्य सामाजिक परिपेक्ष्य में, पृ.–165।
6. डॉ. प्रभा बेनीपुरी– बेनीपुरी जी के नाटकों में सामाजिक चेतना, पृ.–133।
7. संजीव–किशनगढ़ का अहेरी, पृ.–55, पृ.–31।
8. संजीव–धार, पृ.–183, पृ.–41।
9. डॉ. पांडुरंग पाटील–देवेश ठाकुर और उनका साहित्य, पृ. –138।
10. संजीव–दुनिया की सबसे हसीन औरत–पृ.–144, पाँव तले दूब– पृ.–14, 55, आप यहां हैं–पृ.–81, प्रेतमुक्ति– पृ.–102।
11. डॉ. विभस– प्रेमचन्द के उपन्यासों में चित्रित समस्याएं, पृ. –177।